मदमस्त

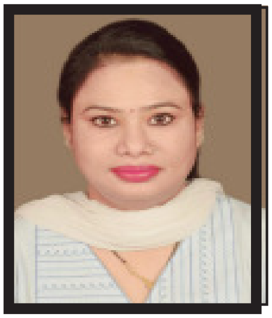

डॉ. तपस्या चौहान
मो. 9027272508

बड़ा सुकून महसूस होता है संडे को। रोज की तरह न कोई जल्दबाजी न कोई भाग दौड़–लेकिन इतवार का दिन भंगियों की बस्ती के लिए खास होता क्योंकि इस दिन सुअर मारकर उसकी आंसी (सुअर की मीट) सभी के द्वारा खरीदी जाती है। सुबह-सुबह सभी बस्ती के लोग उठ गये, क्योंकि आज सूरज का माड़ा भी है। एक बड़े सुअर को मारने के लिए सबसे पहले उसे पकड़ने की प्रक्रिया शुरू हुई। सूरज ने जैसे ही अपनी खुड़ी (सुअर को रखने का स्थान) खोली सुअर भीड़ देख अपनी जान बचाने के लिए भागा और उसके पीछे दस बारह लोगों का एक झुण्ड जिसमें बच्चे भी शामिल थे उस सुअर को पकड़ने के लिए दौड़े। यदि सुअर दौड़ते-दौड़ते सवर्णो की कॉलोनियों में घुस जाता तो सभी सवर्णो के गेट बंद हो जाते और नाक-भौंह सिकोड़कर मुँह को चुन्नी और साड़ी के पल्लुओं से ढकते हुए सवर्ण महिलाएं अपने बच्चों का हाथ पकड़कर धकियाते हुए घर के अंदर ले जातीं। क्योंकि उनके लिए यह बड़ा घृणित और हिंसक कार्य है, लेकिन बस्ती के लोगों के लिए आज तो जश्न का दिन है। इस जश्न में बच्चे, बूढ़े, युवक, युवतियां सभी मदमस्त होने वाले थे। उनके लिए तो सुअर स्वादिष्ट भोजन की वह व्यवस्था है जो पिछले दो वर्षो से खिला-पिला कर बड़ी की जा रही थी। आज वह दिन आ ही गया जब उसे जिस उद्देश्य की पूर्ति के लिए खिलाया-पिलाया जा रहा था, उसे पूरा किया जा सके। उसी को अंजाम देने के लिए सुअर के पीछे वह झुण्ड अठखेलियाँ करते हल्ला मचाते हुए दौड़ रहा था। सुअर दौड़ते-दौड़ते बस्ती में बरसात आने से एकत्र हुए मल-मूत्र और नालियों के पानी पर धूप पड़ने से कीचड़ में तब्दील हुए उस स्थान पर से जैसे ही गुजरा तो वह लगभग आधे शरीर तक कीचड़ से लथपथ हो गया। कीचड़ में दौड़ते हुए खुरों से कीचड़ इधर-उधर छिटकती हुई उसके शिकार के लिए दौड़ रहे झुंड पर भी जा गिरी, पर इन सब बातों से बेफिक्र वे बेधड़क कीचड़ में से ही इस तरह निकलते जा रहे थे। जैसे कि कोई फूलों की पंखुड़ियां बिछी हों। उन लोगों के लिए यह जीवन का एक अंग है जो कि सवर्णो के लिए एक घृणित क्रियाकर्म। सवर्णो के लिए तो सुअर का जान बचाकर भागना और झुण्ड का उसके शिकार के लिए दौड़ना एक वीभत्स दृश्य उत्पन्न कर देता है। इस

प्रकार की घटनाओं से वे अपने घरों के दरवाजे व खिड़कियाँ बंद करके मुक्ति तो पा लेते लेकिन हद तो तब हुई जब सुअर ने उनके घर के आंगन में घुसकर कीचड़ के पैरों की छाप छोड़ने के साथ-साथ दीवारों को भी सान दिया। सुअर के साथ-साथ वह झुण्ड भी उस घर में घुसकर उसे पकड़ने का प्रयत्न करने लगा। भोलू ने कलुआ, बालों, खुन्ना और लाखन को घर के मुख्य दरवाजे पर कुछ तगड़े लड़कों के साथ ऐसे खड़ा किया कि जब सुअर बाहर भागने की कोशिश करे तो तुरंत उसे दबोचा जा सके और स्वयं के साथ चार लड़के लेकर उस घर के भीतर जाकर उसे चारों तरफ से घेर लिया। जैसे ही सुअर ने दाँयी ओर से निकलने की कोशिश की तो बांयी ओर खड़ा भोलू कलुए को निर्देशित करते हुए कहता है, 'अबे! पकड-पकड़-पकड़ जल्दी.. जल्दी..... भोस... के।' तभी सुअर भोलू की मंशा देखकर पीछे खड़े लाखन की तरफ से अचानक फुर्ती के साथ भागकर निकल गया। जैसे ही वह लाखन की तरफ से निकलकर गया तो लाखन उस पर झपटा और तेजी से उसकी पीठ पर उछलकर अगले पैर को पकड़कर गिराना चाहा लेकिन सुअर ने पूरी ताकत लगायी और पैर छुड़वाकर भागा। लाखन उसकी पीठ से फिसलता हुआ नीचे गिर पड़ा और उसका हाथ सुअर के खुरों से घायल हो गया। वह घायल हाथ को ऊपर-नीचे हिलाकर बोला, 'भैन का..., माद..., में बड़ी ताकत है। बचकर भाग गया।' जैसे ही सुअर मुख्य दरवाजे की ओर भागा, बिहारी ने रस्सी का फंदा बालो को लपका दिया। बिहारी को देखकर वह बोला, 'अबे भैये। बिहारी भाई आ गए। क्या बिहारी भाई। इतनी देर में आए हो। भैन के...... सुअर ने हमारी माँ-भैन. .... रखी है। चलो जल्दी।' बिहारी ने हँसते हुए गुटके की पीक से भरे मुँह से बोलने का प्रयास करते हुए कहा, 'भैन के..... तुमसे एक सुअर नई पकड़ा जा रा ऐ। चलो जल्दी।' सुअर हाँफता हुआ सड़क पर आ गया, वह झुंड भी उसके पीछे दौड़ रहा था। बिहारी नंगे पैर साफी कमर से बांधे तेजी के साथ बालों के हाथ से फंदा लेकर थोड़ा आगे की ओर झुकते हुए तेज कदमों के साथ सुअर के पीछे-पीछे दौड़ता चला जा रहा था। सुअर दौड़ते-दौड़ते नाले की पुलिया के नीचे घुस गया। सुअर जोर-जोर से चिंचिया रहा था। मानो उनसे भयाक्रांत होकर प्राणों की भीख माँग रहा हो। पुलिया के नीचे से निकालने के लिए उसमें एक ओर से नाले के पुस्ते पर खड़े होकर डंडे कौंचे जैसे ही वह डंडे के प्रहार से बचने के लिए पुलिया के दूसरी तरफ आया, वहीं घात लगाये बिहारी ने उसके गले में फंदा डाला लेकिन फंदा पूरी तरह से सुअर के गले में न डलकर केवल उसकी थूथड़ी में अटक गया बालो ने आगे बढ़कर रस्सी जोर से पकड़कर खींच दी जो केवल सुअर के ऊपर जबड़े को कस पाई। सुअर जोर-जोर से चें...चें...चें करते हुए चिंचिया रहा था और नाले से बाहर निकलने की कोशिश करने लगा। तभी लाखन और भोलू नाले में उतर गये। नाला कूड़े व मल-मूत्र से ठसा पड़ा था क्योंकि उसकी गहरायी ज्यादा न थी। वे दोनों सुअर के पिछले पैरों को रस्सी से बांधकर ऊपर की ओर धक्का देने लगे। सुअर भी अपने आगे के पैरों को नाले के पुस्ते पर जोर से गढ़ाकर पिछले पैरों को ऊपर की ओर लाने का प्रयास करता रहा। बिहारी और बालो के साथ चार-पाँच लड़के सुअर के मुँह की रस्सी और कान पकड़कर उसे अपनी ओर खींचने लगे। बार-बार प्रयत्न करने पर भी सुअर के न निकल पाने पर कुछ लड़के लाखन और भोलू की मदद के लिए नाले में उतर गये। नाले के अंदर से वे सुअर को ऊपर धक्का दे रहे थे, बिहारी और बालो के साथ लड़के उसे रस्सी से ऊपर अपनी ओर खींच रहे थे सुअर भी पूरी ताकत से जुटा हुआ था बाहर निकलने को। तभी बिहारी ने अपने कुल देवता का नाम लेते हुए जोर से बोला, 'बोल बुलाकी बाबा की।' सभी ने ऊँचे स्वर में सुअर को ऊपर की ओर धकियाते और सामने से रस्सी से खींचते हुए युवाओं के साथ-साथ आस-पास खड़े बच्चों और लोगों ने बोला, 'जैऽऽ। सुअर आखिरकर बाहर निकाल लिया गया। इससे पहले कोई कुछ समझ पाता सुअर फिर से भाग निकला। दोबारा पूरा झूण्ड गालियाँ बकते हुए पीछे भागने लगा। लगभग पैंतालीस मिनट बीत चुके थे, वे लोग और सुअर दोनों थक चुके थे, लेकिन हौसला किसी ने छोड़ा। भोलू के लड़के सूरज ने सुअर के जबड़े में बँधी रस्सी का जमीन पर खींचते हुए सिरे को पकड़ कर अपनी ओर खींचा। रस्सी पर कीचड़ लगे होने के कारण वह उसके हाथों से खिसकने लगी तभी उसने भागते हुए उस रस्सी के अपने हाथ में दो अंटे दे दिये। उस रस्सी को दोनों हाथों से पकड़कर जोर से अपनी ओर खींचने लगा जिससे सुअर के दौड़ने की रफ्तार में थोड़ी कमी आयी। बिहारी पूरी ताकत से दौडने लगा दौड़ते-दौड़ते उसका शरीर पसीनों से लथपथ था। हाथ-पैरों पर मिट्टी और कीचड़ से सने हुए उसके काले शरीर पर गौर से देखने पर दिख रही थी। लाल-लाल बड़ी आंखों में सुअर और मानव के इस युद्ध में सुअर को मार गिराने की लालसा साफ झलक रही थी। इस वक्त उसका दिल,

दिमाग और शरीर एकाग्र होकर सुअर के शिकार की तरफ पूरी तरह से लगा हुआ था। उसने अपनी रफ्तार और तेज कर ली और सुअर के बराबर आ पहुँचा उसी के पीछे भोलू और कलुआ सुअर के दूसरी तरफ बगल में दौड़ने लगे।

भोलू-(दौड़ते हुए सुअर से) 'रुक भोस... के। कलुआ भाई तुम पिछल्ला पैर पकड़ना। मैं अगल्ला।'

कलुआ-(दौड़ते हुए) 'अबे। पकड़-पकड़...'

बिहारी ने तेज कदमों से दौड़ते हुए उस सुअर को पिछली टांग के खुर के ऊपर वाले हिस्से की ओर से पकड़ा। इसी के साथ सुअर को दूसरी तरफ से इस तरह खींचा कि सुअर का संतुलन बिगड़ने लगा। बिगड़ते संतुलन को देख दौड़ते हुए लाखन ने बिहारी की तरफ वाली सुअर की अगली टांग को पकड़कर थोड़ा ऊंचा उठा लिया जिससे सुअर का संतुलन बिगड़ गया और वह जमीन पर गिर गया। उसके गिरते ही इन सभी ने गिरे हुए सुअर के ऊपर घुटने गड़ा दिये। सुअर के चिंचियाने के कर्णभेदी स्वर में इन सभी के हंसी के ठहाके उस दावत का संकेत दे रहे थे, जो उसकी मीट के रूप में कटोरियों में परोसी जाती। सुअर के चिंचियाने की आवाज को कम करने के लिए उसके दोनों जबड़ों को आपस में जोड़कर सुतली से बाँध दिया गया। दो लोगों ने उसके मुँह को दबोच कर रखा था। बिहारी, कलुआ, भोलू, बालो और सूरज अपने एक हाथ से सुअर का पैर और दूसरा हाथ व घुटना सुअर के ऊपर गड़ाये थे। अपने दूसरे घुटने को जमीन पर टेककर सुअर को पूरी ताकत से दबोचे हुए थे। तभी बिहारी ने खुन्ना की ओर इशारा, सुअर के पैर, बाँधने के लिए किया। खुन्ना ने सुतली से सुअर के एक आगे और दूसरा पीछे का पैर मिलाकर बाँध दिये और सभी लोगों ने मिलकर उस अस्सी किलो के सुअर को एक मजबूत लाठी पर टांग लिया, लाठी सुअर के बंधे पैरों के बीच से होकर गुजर रही थी। इस प्रकार लाठी से बंधे सुअर को कंधे पर लटकाकर, हंसी ठिठोली करते हुए उन्होंने बस्ती में ऐसे प्रवेश किया मानो कोई विजय जश्न हो। उसे बस्ती में ले जाकर चौक में पटक दिया। सुअर के मुँह की रस्सी खोलते ही, उसकी चेंऽऽ चेंऽऽ की आवाज ने पूरी बस्ती को इकट्ठा कर लिया। खुन्ना ने हीकने (लम्बा सुएँ जैसा पैना हथियार) से उसके अगले पैर का बगल वाला हिस्सा जो उसके पेट, गर्दन और पैर को आपस में जोड़ता है, उस नाजुक जगह पर घोंप कर उसकी गर्दन तक पहुँच कर सुअर के टेंटुए को तोड़ दिया गया, जिससे सांस न लेने के कारण वह जोर-जोर से छटपटाने लगा। छटपटाहट के साथ ही उसके खून को जमीन पर गिरने से पहले ही एक बड़े बर्तन में इकट्ठा करने लगे। धीरे-धीरे छटपटाहट सुअर के शांत होने के साथ कम हो गई और चिंचयाने का स्वर भी धीमा पड़ता गया। अब सुअर इस जीवन संघर्ष को हार चुका था। यह प्रहार इतनी जोर से होता है कि एक ही प्रहार में सुअर के प्राण पखेरू उड़ जाए। अब बारी आती है सुअर के बाल उखाड़ने की। चार-पाँच लोग सुअर के बाल उखाड़ते हैं! कुछ लोग फूँस लाकर उस सुअर को भूनने की तैयारी करने लगे। सूअर के शरीर को फूँस से भूना जाता तो उसके धुएँ की दुर्गंध दूर तक जाती जिससे सभी को पता चल जाता कि आज फिर से...। धुएँ की दुर्गंध उन सभी के लिए जानी पहचानी है। सुअर भुन गया तो उसे काटने की प्रक्रिया चली। उसे काटने के लिए बड़े-बड़े छुरे और बांक (चौपर) का इस्तेमाल हुआ। सभी ने पहले उसकी मोटी चर्बीयुक्त चमड़ी हटाई, उसी के इंतजार में छोटे बच्चे, सूरज के चालीस गज के मकान की भीतर गोटे और चमकीली कढ़ी-साड़ी पहने घर व पड़ोस की महिलाएं तिक्कों का इंतजार कर रही थीं। बड़ी-बजुर्ग महिलाएं सीधे पल्लू की साड़ी पहनें घूंघट में नीचे पटने पर बैठी नवविवाहित बहुओं को तमीज सीखने के भाषण लगातार दे रही थीं और वे बेजुबान बिना किसी अपराध किये अपराधियों की तरह बेबस-सी चुपचाप बैठीं थीं। कुछ प्रौढ़ औरतें घूंघट में से ही हाथ से बच्चों को इशारा कर तिक्के लाने का इशारा करती तो बच्चे दौड़कर खुन्ना ताऊ के पास जाते तो तिक्कों के ढेर से एक तिक्का उस बच्चे को मिल जाता, लेकिन बच्चे भी बड़े उस्ताद हैं मां के लाख इशारे करने पर भी तिक्के नहीं लाते क्योंकि उन्हें आज पूरी आजादी थी अपनी मां की बात न मानने की। उन बच्चों को पता था कि उनकी मां बाहर नहीं आ सकती है।

थोड़ी देर में लाखन परात भरके तिक्के औरतों के लिए ले आया और सूरज की बुआ के आगे जमीन पर रख दिये। तख्त पर बैठी अस्सी किलों की बुआ ने अपने भारी-भरकम शरीर को जमीन पर रखे तिक्कों की परात के सामने बमुश्किल रखा और कहने लगी, 'अरी! औ! भोलू की लुगाई... कां गई- जे ले दारी, तिक्के खा। आये इत्ते-इत्ते तिक्के खा जाबे... तोऊ सुसरी सूख कै खपरिया है रईए।' ऐसे ही उसने हर एक औरत को चार बातें सुनाकर यह खाद्य बांटा। गजब की बात तो ये थी कि किसी ने बुआ की बात का बुरा नहीं माना क्योंकि यह सभी के

लिए अपनत्व का माहौल उत्पन्न कर रहा था। घर के बाहर और भीतर तिक्कों के नाश्ते के बाद अब सुअर को काटकर उसके गुर्दा, कलेजी और फेफड़े अलग कर दिये गये। पतीले में एकत्र किये सुअर के खून में गुर्दा, कलेजी और फेफडे के छोटे-छोटे टुकड़े काटकर एक बड़े कड़ाह में सरसों का तेल गर्म करके उस तेल में प्याज, , लहसुन, हरी मिर्च आदि उसमें डाल दिये। आग के ऊपर कड़ाह रखे होने से उसके पकने वाली सामग्री की सुंगध वहां बैठे लोगों के मुंह में पानी भर दे रही थी लेकिन कुछ दूरी पर सवर्ण लोगों का दम इस कड़ाह से निकलने वाली दुर्गंध से घुटा जा रहा था। उन सवर्णों की प्रत्येक प्रतिक्रिया से बेपरवाह उन लोगों में जश्न शुरू हो चुका था। किशोरों ने दोपहर के समय चार टेबल मिलाकर उसके ऊपर बड़े-बड़े स्पीकर और म्यूजिक सिस्टम ऐसे रख दिया जैसे वह किसी पेशेवर डी.जे. हो। खैर, जो भी हो अब किशोरों ने बस्ती में रहने वाली युवतियों की ओर इशारा करते हुए अपनी-अपनी पसंद के गाने बजाने लगे। गानों की ध्वनि उतनी तेज कि अन्य लोगों का बात तक करना मुश्किल हो रहा था लेकिन वे किशोर तो अपनी नव-प्रेमलीलाओं के सरोबर में जैसे डूब रहे थे और खुशी से सलेऊ बाल्टी में भरकर चम्मच की मदद से जमीन पर पंक्तिबद्ध बैठे बच्चों और बूढ़ों, सभी के आगे रखी सरैया में गर्मागर्म भाप निकलता सलेऊ परोसते और उसी के पीछे दूसरा किशोर तंदूर की मोटी बड़ी रोटी बांटता चलता। बड़ा उत्साह है परोसने और खाने वालों में। जमीन पर पंक्तिबद्ध उकडू बैठे लोग इस समय वैसे ही आनंद का अनुभव कर रहे हैं जैसा फाइव स्टार में बैठा बड़ा व्यवसायी ए.सी. के सामने टेबल कुर्सी पर बैठे कॉफी की चुस्कियों से करता है। रोजमर्रा की जिंदगी में मेहनत मजदूरी, तिरस्कार और गालियों से दूर जश्न का समय बड़ा ही सुकून देता है। दुनिया की नजर में इस जश्न की भले ही कोई औकात न हो, लेकिन ये तो उनकी खुद की अमीरी है जो वे स्वयं ही महसूस करते हैं, न किसी के लिए घृणा, न द्वेष और न ही हीनभावना, अगर इन लोगों के पास कुछ है, तो निजी खुशी, जो बाहरी दुनिया की सोच और समझ से बिल्कुल परे है।

शाम के वक्त टैंट के अंदर और सूरज के घर-आंगन-छत सभी जगह लोगों की भीड़ एकत्रित हो चुकी थी। दिन छिपते ही बल्बों से रोशनी की जगमगाहट में कुर्सी टेबल दावत के लिए सज गई और उसके ऊपर बच्चों में बैठने की होड़ शुरू हो गई। सबसे पहले बच्चों को सुअर का मीट मिट्टी से बनी सरैया में परोसा गया और बच्चों ने मिर्ची का आनंद लेते हुए तंदूर की रोटी जो उनके छोटे हाथों से बाहर लटकी थी। रोटी बड़ी और गर्म होने की वजह से कुछ बच्चे लकड़ी की टेबल के ऊपर ही रखकर खाने लगे। देखने में यह दावत असभ्य थी लेकिन असल में यही तो असलियत है भूख और गरीबी की। न पंखा, न बड़ा होटल, न रेस्तरां और न ही बैंकट हॉल... फिर भी खाने का भरपूर मजा उन बच्चों में दिखा। टेंट के पीछे फेंकी जाने वाली हड्डियों को खाने के लिए कुत्तों का झुंड लड़ते-लड़ते नाले में गिर गया और बाहर निकल कर चल रही दावत में जा घुसा। सूरज ने उसे भगाने के लिए लड़कों की ओर इशारा करते हुए कहा, 'ओ। लौण्डौं! अबे! जे साले कुत्ते घुसियाए है, भगा जिनै।' इतना कहते ही लड़कों ने उन कुत्तों को भगाने का प्रयास किया, तभी एक कुत्ता भागते हुए कड़ाह में जा गिरा जिसे वहां खड़े तीन-चार युवकों ने फुर्ती से निकाल दिया और वे चारों जोर-जोर से हंसने लगे। वह आपस में इसी घटना के बारे में बातचीत करने लगे-पहला युवक-'अबै। किसी को बतइयो मति कि कुत्ता कढ़ाह में गिर गया ता।'

दूसरा युवक- 'पागल है क्या। मैं काय को बताऊंगा।'

तीसरा युवक- 'अबे पांत तो निपट गई, बस कुछ लोग बचे हैं, बता दिया तो दुबारा गोस (सुअर का मीट) का से लांगे।'

चौथा युवक-'अबे! कुछ नहीं होता। देखा नई होता तो कुत्ते को कढ़ाह में गिरते तो भी तो सब खाते। किसी गरीब का पिलोगनाम (प्रोग्राम) खराब मति न करो। किसी को नेछु मति बताओ। हां। भाई की बात मानों।'

सभी ने सहमति जताई और दावत यूं ही चलती रही। सूरज के घर के सामने नाला था जिसके आगे टेंट लगाकर दावत चल रही थी उसी टैंट के पीछे नाले के पुश्ते पर कुछ लोग चुपचाप शराब भी पी रहे थे। वे सभी अपने बड़ों से छिपकर शराब पी रहे थे तो जो उनके बड़े थे, वे चारपाई पर चद्दर बिछाकर बैठे थे, उनके सामने टेबल पर स्टील के गिलास, शराब की बोतल और प्लेट में सलेऊ, तिक्के और भुना हुआ सुअर का मीट रखा था। वे एक-एक करके सम्मानपूर्वक एक-दूसरे के लिए पैग बनाते और समाज उत्थान जैसे विषय पर गहन चिंतन-मनन करने लगे। तभी गानों की धुन पर कुछ युवक नाचने लगे। उन्हीं के साथ दूसरी बस्ती के युवक भी उसी गाने पर नाचने लगे। दोनों पक्षों में डांस व स्टेप्स की बहस छिड़ गई। तभी एक युवक ने दूसरे पक्ष पर टिप्पणी करते हुए

कहा- 'अबे! मीठे मर्दों वाला नाच।' इसी बात को प्रतिष्ठा पर लेकर दोनों पक्षों में झगड़ा शुरू हो गया। गाली-गलौज अब मार-पीट पर आने लगी तभी सामने बैठे बुजुर्गों ने दोनों पक्षों को समझाया और मामला रफा-दफा किया। खाना खाते खिलाते लगभग रात के साढ़े ग्यारह बज गये। लोगों में टेबल कुर्सी पर बैठकर खाया और कुछ लोगों को जब मीट के कड़ाह से आने वाली खुशबू ने इतना बेबस कर दिया कि उन्होंने जमीन पर उकडू बैठकर वहीं लाइन से खाना शुरू कर दिया। खाना खाने के बाद अपनी सरैयों में मीट और रोटी डलवाकर सुबह के लिए हाथ में उठाकर घर ले जाते लोगों को सर्वर्ण ऐसे देख रहे थे जैसे कि वे कोई पाप कर रहे हों। दूसरे क्या सोचेंगे? इस सोच से परे बस्ती के लोग एक-एक रोटी अपने हाथों में लेकर जा रहे थे ताकि अगली सुबह वे इसी स्वादिष्ट रोटी और मीट का आनंद ले सकें।

दावत लगभग निपट चुकी थी। रिश्तेदार और बस्ती के लगभग सभी लोग अपने-अपने घरों में जा चुके थे। सूरज और सूरज के छह-सात दोस्त दावत के कढ़ाहों और इधर-उधर आधी पूरी बची हुई रोटियों को बटोर कर एक टूटे कनस्टर में इकट्ठा करते जाते ताकि वे दूसरे सुअरों को खिला पायें। अभी वे सुअर छोटे हैं, जब वे बड़े हो जायेंगे तो उन्हें या तो बेच दिया जायेगा या फिर इसी तरह दावत में प्रयोग किया जायेगा। खैर फिलहाल सूरज और उसके दोस्तों ने साथ बैठकर खुशी में शराब पी और फिर बड़े-बड़े स्पीकर्स पर जोर-जोर से गाने बजा दिए जिसे सुनकर बस्ती और सूरज के घर के लोग बाहर निकल आए। गाने की धुन पर सूरज और उसके दोस्तों को थिरकते देख बस्ती के कुछ बुजुर्ग भी नाचने लगे। सभी स्त्रियां घूंघट को हाथों के सहारे से थोड़ा-सा ऊपर उठाकर नाचने वालों को देख रही थीं। उनके पैर भी इन फिल्मी गानों की धुनों पर थिरकने को बेचैन थे, जैसे ही सूरज ने बस्ती की एक महिला का हाथ पकड़ कर नाचने के लिए मैदान में लाया मानो उसकी मुराद पूरी हो गई हो, उसके साथ अन्य महिलाएं भी नाचने लगीं। उफ्फ! ये बेफिक्री! बड़ी महंगी है। ये इतनी आसानी से नहीं मिलती। जश्न की रात है, और बस्ती के लोग मदमस्त हो समाज की व्यवस्था और बनावटीपन से दूर सीमित साधनों में उस सुकून को महसूस कर रहे हैं, जो कहीं नहीं बिकता। लोगों की नजर में बेशक ये असभ्य हैं लेकिन प्रश्न ये है कि सभ्यता की आखिरकार असली पहचान क्या है? क्या सच में वह विकसित हो चुकी है या फिर जिस तरह बस्ती के लोग मिलकर उस जानवर को अपनी दावत बनायें थे, ठीक वैसे ही बस्ती के लोगों तथाकथित समाज के लोगों ने तिरस्कृत और अधिकार विहीन कर डाला है। छटपटाहटी जिंदगी के लिए संघर्ष चाहे जानवर का हो या फिर इंसानी भावनाओं की अस्मिता का। अरे! उसे समझना ही सभ्यता हो सकती है, लेकिन अभी तक सभ्य समाज की परिभाषा समझ नहीं सकी हूं। शायद कुछ समय बाद समझ सकूं।❑

कुछ याद इन्हें भी कर लो...

चौदहवी सदी में महाराष्ट्र से 'संत सोयराबाई कहती है

'देह तो सभी की एक जैसी मांस और रक्त की बनी है, फिर कौन पवित्र है और कौन अपवित्र? इस जगत में शुद्धि और अशुद्धि केवल मन का वहम है। जब ब्रह्मा ने ही सबको बनाया, तो भेदभाव की दीवारें क्यों?'

बारहवीं सदी में कर्नाटक से संत अक्का महादेवी कहती है

'लज्जा क्या है? जब प्रभु का प्रकाश तुम्हारे चारों ओर हो। तुम कहते हो कि स्त्री को पर्दा करना चाहिए, पर जब आत्मा नग्न होकर परमात्मा से मिल रही हो, तब इन चिथड़ों (कपड़ों) की जरूरत किसे है? हे मल्लिकार्जुन! क्या तुम शरीर देखते हो या मन की गहराई?'

तेरहवी सदी में महाराष्ट्र से संत जनाबाई कहती है

'मेरा विठ्ठल तो मेरे साथ गोबर उठाता है, वह मेरे साथ झाड़ू लगाता है और पानी भरता है। वह महान देव अब मेरा सेवक बन गया है, भक्ति के वश में होकर वह जाति और पद सब भूल गया है।'